International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRST

माध्यमिक शालाओ के शिक्षको के व्यक्तित्व को आकार देने में शैक्षणिक संस्थानों का शैक्षणिक प्रबंधन- बिलासपुर क्षेत्र के विशेष सन्दर्भ मे

Divya Singh
Research Scholar, Kalinga University, Kotni Raipur, Chhattisgarh, India

Article Info
Volume 8, Issue 5
Page Number : 60-66
Publication Issue
September-October-2021
Article History
Accepted : 05 Sep 2021
Published : 10 Sep 2021

सार
वर्तमान अध्ययन को बिलासपुर में शिक्षको के व्यक्तित्व के विकास के लिए शैक्षणिक संस्थानों के प्रबंधन का अध्ययन करने के लिए डिज़ाइन किया गया था।

उद्देश्य :
1. शिक्षको के व्यक्तित्व के विकास से संबंधित शैक्षणिक संस्थान के शैक्षणिक कार्य का विश्लेषण करना।
2. व्यक्तित्व के बेहतर विकास के लिए शिक्षण संस्थानों के ढांचागत विकास के अनुप्रयोग का विश्लेषण करना।

समस्या का विवरण

आकर्षक व्यक्तित्व से हर कोई प्रभावित होता है और दूसरों को प्रभावित किए बिना आप आज की प्रतिस्पर्धी दुनिया में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिए व्यक्तित्व विकास का महत्व बहुत बढ़ गया है। इन दिनों हर अच्छा पब्लिक स्कूल अपने शिक्षको के व्यक्तित्व विकास को लेकर सावधान रहता है। इसलिए, अनुसन्धान करता को उक्त विषय पर अध्ययन व प्रस्तावित शोध प्रश्न पर अध्ययन की आवश्यकता महसूस हुईं :

- शिक्षको के व्यक्तित्व के विकास से संबंधित शैक्षणिक संस्थान का शैक्षणिक कार्य क्या है?
- शिक्षको के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षण संस्थान द्वारा की जाने वाली विभिन्न सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ क्या हैं?
- व्यक्तित्व विकास से संबंधित आधुनिक शैक्षिक सहायता के ज्ञान प्रदान करने और कार्यान्वयन में शिक्षक का क्या योगदान है?
- व्यक्तित्व के बेहतर विकास के लिए शैक्षणिक संस्थानों के ढांचागत विकास का क्या अनुप्रयोग है?

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

अनुसन्धान पद्धति :

प्राथमिक डेटा एकत्र करने में यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक को अपनाया गया है।

नमूने में यादृच्छिक रूप से चयनित हाई स्कूलों के 100 स्कूल प्रमुखों के प्रधानाध्यापक शामिल थे। इस अध्ययन में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को आकार देने में शैक्षिक संस्थानों के प्रबंधन को मापने हेतु प्रश्नावली तैयार की गई है।

अध्ययन का परिसीमन

- अध्ययन केवल बिलासपुर तक ही सीमित था।
- अध्ययन को आगे शिक्षको और स्कूल प्रमुखों के प्रधानाध्यापकों तक सीमित कर दिया गया था।
- इसके अलावा, वर्तमान अध्ययन के लिए केवल 150 छात्र व 10 स्कूल के शिक्षक का चयन किया गया था

विशलेषण

व्यक्तित्व विकास के लिए हाई स्कूल स्तर प्राध्यापको द्वारा शिक्षको के लिए किए गए प्रयासों से संबंधित आंकड़े		
प्रश्न	हाँ	नहीं
क्या आप मानते हैं कि मेरे व्यक्तित्व के विकास में स्कूल का बड़ा हिस्सा है?	75	25
क्या आप स्कूल में राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भाग लेते हैं?	95	05
क्या स्कूल प्रयोगशाला में प्रयोगशाला उपकरण पाठ्यक्रम के अनुसार आपके लिए उपयोगी है?	80	20
क्या आपको विभिन्न कार्यों की योजना बनाने में शिक्षक से प्रोत्साहन मिलता है?	66	34

व्यक्तित्व विकास के लिए हाई स्कूल स्तर प्राध्यापको द्वारा शिक्षको के लिए किए गए प्रयासों से संबंधित आंकड़े		
प्रश्न	हाँ	नहीं
क्या स्कूल में पर्याप्त खेल सामग्री है और यह छात्र के लिए बहुत उपयोगी है?	55	45
क्या आपको अपने विद्यालय में पुस्तकालय की उपलब्धता के बारे में जानकारी है?	90	10
क्या स्कूल और शिक्षक अंग्रेजी भाषा को सुधारने के लिए विशेष प्रयास करते हैं?	78	22
क्या आप विशेष गतिविधियों में भाग लेते हैं?	70	30

प्रश्न	हाँ
क्या आपके विद्यालय में कंप्यूटर प्रयोगशाला है?	90
क्या आपके संस्थान में शिक्षण स्टाफ कंप्यूटर साक्षर है?	100

व्यक्तित्व विकास के लिए हाई स्कूल स्तर प्राध्यापको द्वारा शिक्षको के लिए किए गए प्रयासों से संबंधित आंकड़े						
School Building	Well Equipped Laboratory	Books	Computers	Colour TV	L.C.D.	Cycle Stand
क्या संस्थान में निम्नलिखित आधारभूत संरचना है?						
10	80	90	90	20	10	100

सामान्य अवलोकन

निम्नलिखित प्रेक्षण शोधकर्ता की पहचान की गई संस्थाओं के प्रमुखों के साथ हुई बातचीत पर आधारित हैं जो एकत्र किए गए डेटा के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा भी समर्थित हैं।

क महिलाओ के समग्र व्यक्तित्व के मामले में पुरुषो की तुलना में बेहतर पाया गया।

ख (यह देखा गया है कि बिलासपुर में शिक्षा के सभी स्तरों के शिक्षको ने अपने व्यक्तित्व का अच्छा विकास किया है। इसका श्रेय बिलासपुर में शिक्षको को उपलब्ध विभिन्न उपकरणों/उपकरणों की उपलब्धता को दिया जा सकता है।

ग (राज्य सरकार द्वारा गैर-वेतन अनुदान जारी न करने के कारण शैक्षणिक संस्थानों को व्यक्तित्व विकास गतिविधियों की गुणवत्ता और सामग्री में सुधार करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

घ (यह भी देखा गया कि शिक्षण सीखने की प्रक्रिया में बाधा आती है क्योंकि शिक्षक विभिन्न अन्य सरकारी कार्यों में लगे हुए हैं। शैक्षणिक कार्य के बजाय गतिविधियाँ। सरकार को इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए और आने वाली पीढ़ी के अंतिम हित में शिक्षकों को कुछ राहत देनी चाहिए।

ई (यह देखा गया है कि अनुदान प्राप्त करने वाले शैक्षणिक संस्थान गैर-अनुदान योग्य या स्थायी रूप से गैर-अनुदान योग्य शैक्षणिक संस्थानों की तुलना में प्रशासनिक, शैक्षणिक कार्य और भौतिक बुनियादी ढांचे में श्रेष्ठ हैं।

बुनियादी ढांचे के पहलू

- शोधकर्ता द्वारा यह देखा गया है कि अर्ध-शहरी क्षेत्र की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र के स्कूलों में उपलब्ध बुनियादी ढांचा खराब है। विशेष रूप से शुद्ध पेयजल, स्वच्छ शौचालय, लड़कियों के लिए अलग शौचालय ब्लॉक, लड़कियों के लिए कॉमन रूम आदि की उपलब्धता के संबंध में। ये बुनियादी आवश्यकताएं हैं और सरकार। इसे प्रदान करना चाहिए।
- यह देखा गया है कि वार्षिक रूप से छात्र समुदाय की स्वास्थ्य जांच का अभाव होता है। इस आधार पर ग्रामीण या अर्धनगरीय केन्द्रों में कोई भेद नहीं है। कम से कम वार्षिक अंतराल पर प्रारंभिक चरण में इस तरह की चिकित्सा जांच को आवश्यक माना जाता है क्योंकि यदि पहले चरण में कोई कमी पाई जाती है तो गंभीर अवस्था में आने से पहले इसे ठीक किया जा सकता है।
- अधिकांश उच्च विद्यालयों में संदर्भ पुस्तकालय नहीं थे।
- उच्च विद्यालयों में भी पुस्तकालय को अद्यतन रखने का प्रयास किया जाना चाहिए और अधिकारियों को पुस्तकालय के लिए उपयोग की जाने वाली धनराशि को एक निवेश के रूप में देखना चाहिए।
- यह देखा गया है कि बिजली की कमी के कारण सभी शिक्षण संस्थानों को अपने प्रयोगशाला कार्य को कुशलतापूर्वक संचालित करने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। वार्षिक परीक्षा में भी बिजली गुल होने से परीक्षा का कार्य पूरा करने में बड़ी समस्या होती है। निरंतर बिजली की अनुपलब्धता के

परिणामस्वरूप प्रयोगशाला के अलावा अन्य काम जैसे एलसीडी प्लेयर, ओवर हेड प्रोजेक्टर, कॉमन एड्रेस सिस्टम आदि भी बाधित होते हैं।

- कई स्कूल शरदोत्सव, गणेशोत्सव, रक्षा बंधन, वार्षिक सामाजिक सभा जैसे विशेष समारोह मनाते हैं।
- सरकार को यह सुनिश्चित करने का प्रयास करना चाहिए कि सभी हाई स्कूलों में कंप्यूटर लैब शुरू हो जाएं ताकि जमीनी स्तर पर भी कंप्यूटर साक्षरता में सुधार करने में मदद मिल सके।
- स्कूल 'वर्ष के सर्वश्रेष्ठ छात्र' पुरस्कार की स्थापना कर सकते हैं और मानदंड तैयार कर सकते हैं जिस पर प्रदर्शन का मूल्यांकन किया जाएगा। इन मापदंडों से शिक्षको को अवगत कराया जा सकता है ताकि पुरस्कार प्राप्त करने के लिए उनमें प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा हो। इस प्रक्रिया में अनजाने में व्यक्तित्व का विकास होगा। इससे संस्थागत स्तर पर अनुशासन में भी सुधार होगा।
- सभी स्तरों और प्रकार के शिक्षण संस्थानों को अपने क्षेत्र में पर्यावरण के संरक्षण और संरक्षण पर शिक्षको का ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इस प्रयोजन के लिए एनसीसी/एनएसएस शिविरों का उपयोग एक उपकरण के रूप में किया जा सकता है।

निष्कर्ष

आज किसी भी माता-पिता की चिंता यह होती है कि वे अपने बच्चों को उनके जीवन के सपनों को कैसे साकार करें। अच्छी शिक्षा की दौड़ उस दिन से शुरू होती है जिस दिन बच्चा दो साल का हो जाता है और जब तक बच्चा कॉलेज में प्रवेश नहीं करता तब तक समाप्त नहीं होता है। साल दर साल भारतीय अर्थव्यवस्था के वैश्विक होते जाने के साथ, सर्वश्रेष्ठ स्कूलों में सीट हासिल करने की होड़ और भी गंभीर हो गई है। माता-पिता के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को अधिक से अधिक महत्व देने और मध्यम वर्ग के उछाल के साथ, स्कूल परियोजना पर निवेश एक लोकप्रिय निर्णय बन रहा है। इससे स्कूलों का विस्तार हुआ है।

केंद्र और राज्य दोनों सरकारों ने अगले दशक में समाज में होने वाले परिवर्तनों के अनुरूप पाठ्यक्रम को संशोधित करने पर ध्यान केंद्रित करना शुरू कर दिया है।

स्कूल पाठ्यक्रम अधिक गतिविधि उन्मुख और इंटरैक्टिव होता जा रहा है। कक्षाओं को और भी अधिक संवादात्मक बनाने के लिए शिक्षा से संबंधित बहुत सारे उद्योग बहुत तेजी से प्रौद्योगिकी और उपकरण पेश कर रहे हैं। जो केवल चाक और टॉक क्लासरूम हुआ करता था, वह शिक्षको के लिए मस्ती और मस्ती के साथ सीखने का एक दिलचस्प माहौल बनता जा रहा है।

हालाँकि, एक बहुत ही महत्वपूर्ण क्षेत्र को अभी भी वह ध्यान नहीं मिल रहा है जिसके वह हकदार है। यह बच्चों के लिए व्यक्तित्व विकास है। मेडिकल और इंजीनियरिंग कॉलेजों में अधिक से अधिक प्रतिस्पर्धा के साथ, उच्च कक्षाओं में ध्यान अंक-स्कोरिंग पर जा रहा है और व्यक्तित्व का विकास नहीं कर रहा है। एक महत्वपूर्ण बात जो माता-पिता और शिक्षकों को नहीं भूलना चाहिए, वह है व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की आवश्यकता।

स्कूलों और शिक्षकों को बच्चों के व्यक्तित्व के विकास को प्राथमिकता देनी चाहिए जो कि और भी महत्वपूर्ण है। इसे महसूस करते हुए केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने अपने स्कूलों में बच्चों के पाठ्यक्रम और मूल्यांकन में व्यापक बदलाव किए हैं।

संशोधित पाठ्यक्रम के तहत व्यक्तित्व विकास और जीवन कौशल को समान महत्व दिया जाता है और एक छात्र का मूल्यांकन 360 डिग्री किया जाता है।

प्रयोगशालाओं

बहुत लंबे समय से, स्कूल प्रयोगशालाओं पर निवेश कर रहे हैं जहाँ बच्चों को विज्ञान के अनुप्रयोग पहलुओं को समझने का अनुभव मिलता है। हालांकि, ये लैब बायोलॉजी, केमिस्ट्री और फिजिक्स तक ही सीमित हैं।

हाल ही में, भाषा प्रयोगशालाएं और गणित प्रयोगशालाएं लोकप्रिय हो रही हैं। स्कूलों को अब एक और प्रयोगशाला जोड़नी चाहिए :व्यक्तित्व विकास प्रयोगशाला।

इससे शिक्षको और शिक्षकों को एक अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण करने की प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करने में मदद मिलेगी। 'व्यक्तित्व' शब्द का शब्दकोश अर्थ वह गुण है जो किसी व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करता है, वह गुण जो किसी को दिलचस्प या लोकप्रिय बनाता है।

'विकास' शब्द का अर्थ विकास की क्रिया है। एक साथ, व्यक्तित्व विकास वाक्यांश का अर्थ व्यवहार, दृष्टिकोण, चरित्र, लक्षण, आदतों, शिष्टाचार और शिष्टाचार के एक संगठित पैटर्न के विकास के लिए शुरू की गई विभिन्न क्रियाओं से हो सकता है जो एक व्यक्ति को अद्वितीय और विशिष्ट बना देगा।

जहां विज्ञान प्रयोगशालाएं विज्ञान के विभिन्न सिद्धांतों पर ज्ञान प्रदान करती हैं, वहीं व्यक्तित्व विकास प्रयोगशाला इस बात पर ध्यान केंद्रित करेगी कि ऊपर वर्णित कुछ लक्षणों को कैसे विकसित किया जाए। इसे कुछ जीवन कौशलों पर ध्यान देना चाहिए जैसे:

.1संचार और सार्वजनिक बोलना

.2भावनात्मक बुद्धिमत्ता

.3पारस्परिक संबंध

.4सामाजिक व्यवहार के मानदंड जैसे शिष्टाचार और शिष्टाचार

.5योग और ध्यान के माध्यम से मन और शरीर की फिटनेस

.6समस्या समाधान और सोचने का कौशल

.7मुखरता

.8लीडरशिप और टीम वर्किंग

.9आत्म सशक्तिकरण और समय प्रबंधन

और सूची स्कूलों के स्थान के आधार पर बहुत कुछ कवर कर सकती है। प्रयोगशाला किशोर और किशोर समस्याओं से संबंधित मुद्दों को भी उठा सकती है। यदि आप कुछ समय के लिए सोचते हैं, तो आप समझ जाएंगे कि बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण जीवन जीने के लिए ये मुद्दे कितने महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण हैं। वास्तव में, शिक्षकों के प्रशिक्षण में इन मुद्दों को भी अन्य विषयों की तरह पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में शामिल किया जाना चाहिए ताकि शिक्षक इन विषयों को व्यक्तित्व विकास प्रयोगशाला में संभालने के लिए सुसज्जित हों।

शिक्षको को सिखाया जाना चाहिए कि एक अच्छा नेता और नेतृत्व के विभिन्न सिद्धांत क्या हैं। शिक्षको को प्रेरणा के सिद्धांतों से परिचित कराया जाना चाहिए जैसे कि मास्लो की ज़रूरतों का पदानुक्रम और फ्रेडरिक हर्ज़बर्ग की प्रेरणा और स्वच्छता कारक।

सामूहिक खेल

एक प्रभावी टीम बनाने का तरीका सिखाने के लिए विभिन्न प्रबंधन खेल हैं और इन खेलों को स्कूलों के व्यक्तित्व विकास प्रयोगशाला में खेला जाना चाहिए। इसी तरह बच्चों के अन्य जीवन कौशलों को व्यक्तित्व विकास प्रयोगशालाओं में शामिल किया जाना चाहिए।

वास्तव में यह एक अच्छा विचार होगा यदि उन संगठनों के मानव संसाधन विकास विभाग जहां स्कूल स्थित है, व्यक्तित्व विकास प्रयोगशालाओं में सक्रिय रूप से शामिल हो जाते हैं। यह कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी पोर्टफोलियो का हिस्सा हो सकता है। इस योगदान के बदले में, संगठन को अपने भावी कर्मचारियों के रूप में अच्छी तरह से सूचित और प्रशिक्षित शिक्षको को मिलेगा। कहने की जरूरत नहीं है कि शिक्षक भी इन महत्वपूर्ण जीवन कौशल में प्रशिक्षित होंगे।

हमें यह याद रखना होगा कि स्कूल न केवल शिक्षा प्रदान करने के केंद्र हैं, बल्कि भविष्य के समाज के लिए अच्छे नागरिकों का मुख्य योगदानकर्ता भी हैं, जहां ये कौशल विषय ज्ञान और कक्षा की उत्कृष्टता से कहीं अधिक मायने रखते हैं।

निष्कर्ष के रूप में शोधकर्ता का मत है कि हाई स्कूल के शैक्षिक संस्थानों की शिक्षको के व्यक्तित्व को आकार देने में सकारात्मक भूमिका होती है। इस संबंध में सकारात्मक भूमिका निभाना 21वीं सदी की आवश्यकता है। वर्तमान समय के संदर्भ में जब सभी स्तरों पर कड़ी प्रतिस्पर्धा है, एक स्वस्थ, विकसित व्यक्तित्व सुनिश्चित करना एक महत्वपूर्ण पहलू बन गया है और इसलिए शिक्षण संस्थानों को हमेशा छात्र के व्यक्तित्व के विकास के लिए नए क्षेत्रों / नए कार्यक्रमों और नए साधनों को खोजने का प्रयास करना चाहिए।

इस प्रकार समापन पहलू को हाई स्कूल के एक समारोह के रूप में व्यक्तित्व विकास को प्रतिबिंबित करना चाहिए। व्यक्तित्व विकास में शिक्षण संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा एक व्यवहारिक विज्ञान है जो आधुनिक

युग में अधिक महत्वपूर्ण होता जा रहा है। ज्ञान उद्योग की आज की दुनिया में, कोई भी शिक्षा के महत्व और इस तरह शिक्षको के व्यक्तित्व विकास को नजरअंदाज नहीं कर सकता है। तदनुसार, शैक्षणिक संस्थानों को व्यक्तित्व विकास के क्षेत्र में लगातार अनुसंधान और विस्तार गतिविधियों का संचालन करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रंथ सूचि

- कॉनेल एच एम, (1985)एसेंशियल्स ऑफ चाइल्ड साइकियाट्री। दूसरा संस्करण। लंदन :ब्लैकवेल साइंटिफिक पब्लिकेशन्स.
- कपलान रॉबर्ट एम .एंड सैकुज़ो, (" (2009मनोवैज्ञानिक परीक्षण, सिद्धांत, अनुप्रयोग और मुद्दे", सनत प्रिंटर, द्वितीय भारतीय पुनर्मुद्रण, छठा संस्करण।
- जैन सुरेंद्र, सोनिया भार्गव(2010) , "मानव संसाधन प्रबंधन "ज्ञान पुस्तक वितरक, रायगढ़
- नरवणे, मीनल, (" (2008भारततिल शैक्षिक आयोग वा समास्य", नित्यानुतन प्रकाशन, पुणे
- Pawar Nandan, Baba Supare, Shankarrao (1993), “Vidyarthi Seva/kalian and Vidyarthi Gunavatta Vikas “ Yashvantrao Chavan Open University, Nasik.
- R. E. Irvine, et al. The older patient. 4th ed. London: Hodder and stoughton, 1986.
- Richardson L R, , Psychiatry and you. 4th ed. New York: Basic Books, 1990.
- Sharma Ram Nath & S. S. Chandra, “General Psychology” Atlantic Publishers & Distributors, Raigarh

REPORTS

- Buch M. B. (1986), “Third Survey of Research in Education, 1978-1983”, NCERT, Raigarh.
- NCERT, (1997) “Sixth Survey of Educational Research 1993-2000” NCERT, Raigarh
- Economic Survey of Maharashtra 2010-11, Finance and Statistical Directorate, Planning Division, Maharashtra State, Mumbai

Websites

1 http//www.en.wikipedia.org/wiki/Personality development
2 http://changingminds.org/explanations/personality/personality_is.htm
3 directory.com